8

साधारण स्वर-१

पाणिनीय व्याकरण में तो अन्य प्रसिद्ध व्याकरणों से स्वर विषय में चर्चा अधिक रूप से दिखाई देती है। स्वर विधायक अनेक सूत्र अष्टाध्यायी में हैं। वहाँ विद्यमान कुछ सूत्रों के द्वारा धातुस्वर का विधान है, कुछ से प्रत्यय स्वर का विधान है। अन्यों से प्रातिपदिक स्वर का विधान है। इनसे भिन्न साधारण स्वर विधायक भी अनेक सूत्र को अष्टाध्यायी में प्रयोग किया है। उन सूत्रों के द्वारा कोई विशिष्ट स्वर का विधान नहीं करते हैं, अपितु साधारणों को ही स्वरों में विधान करते हैं उन सूत्रों से वे ही सूत्र हमारे इस पाठ में संगृहीत हैं। यहाँ प्रधान रूप से कुछ उदात्त आदि स्वरों का विधान करते हैं, कुछ सूत्रों के द्वारा उन स्वरों का निषेध भी होता है। स्वर विषय का सही ज्ञान को प्राप्त करने के लिए हमारे द्वारा अवश्य ही इस साधारण स्वर प्रकरण को पढना चाहिए। इस पाठ में हम उन उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आख्या स्वरों को और उसके विधायक सूत्रों को पढ़ेगे। इस पाठ से हम दस सूत्र पढ़ेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- मन्त्रों के स्वर विधान के विषय में जान पाने में;
- स्वर विधायक सूत्रों को समझ पाने में;
- सूत्रों का अर्थ और उदाहरणों को समझ पाने में;
- उदाहरणों में सूत्रों के अर्थों का समन्वय कैसे होता है, इसे समझ पाने में; और
- आमंत्रित विषयों को जान पाने में।

8.1 अनुदात्तं पदमेकवर्जम्॥ (६.१.१५६)

सूत्र का अर्थ – जिस पद में जिसका उदात्त अथवा स्वरित का विधान किया जाता है, उस एक अच् को छोड़ कर शेष वे सभी पद अनुदात्त वाचक होते हैं।

सूत्र व्याख्या – छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह परिभाषा सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अनुदात्तं पदम् एकवर्जम् इति सूत्र में आये पदच्छेद हैं। अनुदात्तम् यह प्रथमान्त तद्धितान्त पद है। पदम् यह प्रथमान्त पद है। एकवर्जम् यह भी प्रथमान्त पद है। अनुदात्त इसके हैं, इस अर्थ में अनुदात्त शब्द से 'अर्श-आदिभ्योऽच्' इस सूत्र से मत्वर्थीय-अच् प्रत्यय होने पर अनुदात्त यह पद निष्पन्न होता है। उसका अर्थ होता है 'अनुदात्त-अच् विशिष्ट पद है।' एकवर्जम् इस पद का 'एक को छोड़कर' यह अर्थ है। एकवर्जम्-इस पद में 'द्वितीयायां च' इस सूत्र से णमुल्-प्रत्यय होता है। परिभाषा पद उपस्थित करता है। अर्थात् परिभाषा सूत्र से अन्य सूत्र में कुछ पद को उपस्थित करते हैं, वैसे ही इस सूत्र का भी परिभाषा सूत्र होने से इस सूत्र से 'एक को छोड़कर अनुदात्त पद है'।

उस एक पद में वर्तमान अच् अनुदात्त होते हैं, एक को छोड़कर यह अर्थ प्राप्त होता है। तब जिस एक को छोड़कर अन्य अनुदात्त होते हैं ऐसा कहते हैं, वह एक अच् किस प्रकार का होता है यह शङ्का उत्पन्न होती है। वहाँ कहा जाता है कि वह अच् उदात्त अथवा स्वरित होता है। उस सूत्र का सामान्य अर्थ होता है की एक पद में जितने अच् हैं, उनमे एक उदात्त अथवा स्वरित अच् को छोड़कर अन्य सभी अच् अनुदात्त होते है।

उदाहरणम् – गोपाय नः स्वस्तये इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय – रक्षण क्रियावाचि भ्वादिगण में पढ़ी हुई गुपू धातु से पकार के उत्तर ऊकार का 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इस सूत्र से इत् संज्ञा होने पर 'तस्य लोपः' इससे लोप करने पर गुप् इस स्थिति में 'धातोः' इस सूत्र से गुप्-धातु के अन्त्य का अच् गकार के उत्तर उकार का उदात्त स्वर का विधान होता है। वहाँ गुप्-धातु से 'गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः' इस सूत्र से आय प्रत्यय करने पर गोपाय इस के ओकार का उकार की ही विकृत होने से उदात्तत्व होता है। गोपाय इससे आय प्रत्ययान्त होने से 'सनाद्यन्ता धातवः' इससे धातु संज्ञा में 'धातोः' इस सूत्र से गोपाय-धातु के अन्त्य अच् यकार उत्तर अकार का उदात्त स्वर का विधान है। वहाँ गोपाय धातु लोट् में मध्यम पुरुष एकवचन में सिप्-प्रत्यय करने पर प्रक्रिया कार्य में गोपाय यह रूप होता है। गोपाय यहाँ पर गकार उत्तर ओकार उदात्त है और यकार उत्तर अकार उदात्त है। उसको प्रकृत सूत्र से यकार उत्तर उदात्त अकार को छोड़कर गकार उत्तर ओकार और पकार उत्तर आकार अनुदात्त होता है। इसलिए ही गोपाय नः स्वस्तये यह प्रयोग सिद्ध होता है।

8.2 अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः॥ (६.१.१६१)

सूत्र का अर्थ – जिस अनुदात्त के पर उदात्त का लोप होता है तो उसको उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या – छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में चार पद विद्यमान हैं। 'अनुदात्तस्य च यत्र उदात्तलोपः' इस सूत्र में आये

टिप्पणियाँ

पदच्छेद है। वहाँ अनुदात्तस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्यय पद है। यत्र यह भी अव्यय पद है। उदात्तलोपः यह प्रथमान्त समस्त पद है। उदात्त का लोप उदात्तलोप यहाँ षष्ठीतत्पुरुष समास है। 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस पूर्वसूत्र से उदात्त इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। जहाँ उदात्तलोप होता है (वहाँ) अनुदात्त को उदात्त होता है इस प्रकार की पद योजना होती है। अनुदात्तस्य इस पद का जहाँ इति पद के साथ सम्बन्ध है। उससे जिस अनुदात्त के परे यह अर्थ प्राप्त होता है। इसलिए ही जिस अनुदात्त के परे होने पर उदात्त का लोप होता है, उस अनुदात्त को उदात्त होता है यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण - देवीं वाचम् इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय - पचादिगण में देवट्- इस शब्द के पाठ से दिव्-धातु को 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' इस सूत्र से अच्-प्रत्यय करने पर देवशब्द बनता है। अच्-प्रत्यय के चकार का 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से इत्संज्ञा होती है, उससे अच्-प्रत्यय चित् है। उसको 'चितः' इस सूत्र से अच्-प्रत्ययान्त देव शब्द का अन्तिम अच् अकार को उदात्त स्वर की प्राप्ति होती है। इस प्रकार अन्त उदात्त देव शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' इस सूत्र से ङीप्रत्यय होने पर देव ङीप् यह स्थिति होती है। वहाँ ङीप्रत्यय के पकार की इत संज्ञा होने से वह प्रत्यय पित् होता है। उसको 'अनुदात्तौ सुप्पितौ' इस सूत्र से ङीप्रत्यय के अवयव ईकार को अनुदात्त स्वर की विवक्षा है। वहाँ देव ई इस स्थिति में 'यचि भम्' इस सूत्र से देव इसकी भ संज्ञा होने पर 'यस्येति च' इस सूत्र से ईकार परक होने से पूर्व की भ संज्ञक देव इसके वकार के उत्तर अकार का लोप होने पर देव् ई यह स्थिति होती है। यहाँ ईकार रूप अनुदात्त के परे होने पर पूर्व अकार रूप उदात्त का लोप हुआ, उसमें प्रकृत सूत्र से उस अनुदात्त ईकार को उदात्त स्वर करने का विधान है। इसलिए देवीं वाचम् यह प्रयोग सिद्ध होता है।

४.३ चौ॥ (६.१.२२२)

सूत्र का अर्थ - अञ्चु धातु के अकार और नकार का लोप होने पर पूर्व को अन्त उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या - पाणिनि के छः प्रकार के सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में एक ही पद है। और उस चौ यह पद सप्तमी एकवचनान्त है। 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस पूर्व सूत्र से 'अन्तः उदात्तः' ये प्रथमान्त के दो पदो की अनुवृति है। चौ अन्तः उदात्तः यह पद योजना होती है। चौ यहाँ पर सप्तमी है, उससे 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' इस परिभाषा बल से पूर्वस्य यह पद उपस्थित होता है। चौ इससे लुप्त अकार विशिष्ट अञ्चु धातु को ग्रहण करते हैं। उससे लुप्त अकार विशिष्ट होने पर अञ्चु धातु के पर होने पर पूर्व का जो अन्तिम अच् है, उसको उदात्त स्वर होता है यह सूत्र अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण - देवद्रीचीं नयत देवयन्तः इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय - देव-इस उपपद पूर्वक होने से अञ्च्-धातु को 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दि गुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इस सूत्र से क्विन् प्रत्यय के करने पर प्रक्रिया कार्य में देव अच् इस

स्थिति में 'विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतावप्रत्यये' इस सूत्र से क्विन्प्रत्ययान्त अञ्च्-धातु से परत्व होने पर देव शब्द का अकार के स्थान में अद्रि-इस आदेश में देवद्रि अच् इस स्थिति में 'उगितश्च' इस सूत्र से स्त्रीत्व की विवक्षा में देवद्रि अच् -इस शब्द से ङीप्प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर देवद्रि अच् ई इस स्थिति में 'अचः' इस सूत्र से लुप्त नकार के अञ्च धातु के अकार का लोप होने पर देवद्रि च् ई इस स्थिति में 'चौ' (६.३.१३८) इस सूत्र से लुप्त अकार अञ्च्धातु के परत्व होने से पूर्व के अणः इकार का दीर्घ होने पर देवद्रीची इस स्थिति में लुप्त अकार का अञ्च्धातु से परत्व होने पर पूर्व के देवद्री-इस अन्त्य ईकार के प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर की प्राप्ति होती है। उससे देवद्रीचीं नयत देवयन्तः यह प्रयोग सिद्ध होता है।

विशेष - उदात्त निवृत्ति स्वर अपवाद भूत यह सूत्र है। अर्थात् उदात्त के लोप निमित्त करने पर 'अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः' इस सूत्र से अनुदात्त के स्थान में जो उदात्त स्वर का विधान होता है, उसका अपवाद भूत यह सूत्र है। उस देव-इस उपपद पूर्वक अञ्च्-धातु से क्विन्प्रत्यय करने पर प्रक्रिया कार्य में देव अच् इस स्थिति में 'गतिकारकोपपदात् कृत्' इससे उत्तर पद प्रकृति स्वर करने पर अञ्च्धातु का अकार उदात्त होता है। वहाँ देव शब्द के अकार के स्थान में अद्रि-यह आदेश होने पर देवद्रि अच् इस स्थिति में, वहाँ ङीप्प्रत्यय करने पर ङीप्प्रत्यय के पित्त् होने से 'अनुदात्तौ सुप्पितौ' इससे ङीप्प्रत्यय का ईकार को अनुदात्त स्वर होता है, उससे 'अचः' इससे अञ्च्धातु के उदात्त अकार का लोप होने पर 'अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः' इस सूत्र से अनुदात्त ङीप्प्रत्यय के ईकार का उदात्त निवृत्ति स्वर प्राप्त होता है, तब उसको हटाकर प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर का विधान प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. अनुदात्तं पदमेकवर्जम् यह किस प्रकार का सूत्र है?
2. अनुदात्तं पदमेकवर्जम् इस सूत्र में अनुदात्तम् इस पद में किस अर्थ में क्या प्रत्यय है?
3. अनुदात्तं पदमेकवर्जम् इस सूत्र से किस स्वर की प्राप्ति होती है?
4. अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः इस सूत्र का क्या अर्थ है?
5. अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः इसका एक उदाहरण लिखिए।
6. चौ यह सूत्र किसका अपवाद है?
7. चौ इस सूत्र में चौ इस पद का क्या अर्थ है?
8. चौ इस सूत्र का एक उदाहरण लिखिए।

टिप्पणियाँ

8.4 आमन्त्रितस्य च॥ (६.१.१९८)

सूत्रार्थः – आमन्त्रित का आदि उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या – छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ आमन्त्रितस्य यह षष्ठी का एकवचनान्त पद है। च यह अव्यय पद है। 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इस पूर्व सूत्र से उदात्त इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। और आदिः इस प्रथमान्त पद की पूर्व सूत्र से अनुवृति आती है। उससे आमन्त्रित का आदि उदात्त होता है यह पद योजना बनाती है। आदिः इस पद को उदात्त इसका विशेषण होता है। अच् ही उदात्त आदि स्वर होते हैं। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है की आमन्त्रित का आदि अच् उदात्त होता है।

सम्बोधन में अथवा प्रथमा, उस पद की आमन्त्रित संज्ञा होती है। 'सामन्त्रितम्' यह आमन्त्रित संज्ञा विधायक सूत्र है। जैसे देवदत्त! यह देवदत्त शब्द का सम्बोधन एकवचन का रूप है। अत देवदत्त इस पद की आमन्त्रित संज्ञा होती है।

उदाहरण – अग्नि इन्द्र वरुण मित्र देवाः इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय – प्रस्तुत इस उदाहरण में अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र, और देव ये पांच सम्बोधन पद हैं। इसलिए इन पाँच पदों की 'सामन्त्रितम्' इस सूत्र से आमन्त्रित संज्ञा होती है। वहाँ अग्नि शब्द का सम्बोधन एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर अग्नि स् इस स्थिति में 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इस सूत्र से सु प्रत्यय की सम्बुद्धि संज्ञा में 'ह्रस्वस्य गुणः' इस सूत्र से सम्बुद्धि परक होने पर ह्रस्व अङ्ग संज्ञक अग्नि शब्द के अन्तिम इकार के स्थान में गुण एकार होने पर, अग्ने स् यह स्थिति होती है। वहाँ 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इस सूत्र से एङन्त अग्नि इसके पर सम्बुद्धि हल् सकार का लोप होने पर अग्ने यह पद सिद्ध होता है। वहाँ आमन्त्रित संज्ञक अग्नि इस पद के आदि अच् अकार के स्थान में प्रकृत सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इसी प्रकार ही इन्द्र, वरुण, मित्र, देव, इत्यादि में भी आदि अचों को यथाक्रम इकार, अकार, इकार, और एकार को उदात्त स्वर प्रकृत सूत्र से होता है। इसलिए ही अग्ने यह प्रयोग सिद्ध होता है।

8.5 आमन्त्रितस्य च॥ (८.१.१९)

सूत्र का अर्थ – पद से उत्तर आमन्त्रित संज्ञक सम्पूर्ण पद को भी पाद के आदि मे वर्तमान न हो तो अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या – छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। आमन्त्रितस्य यह षष्ठी का एकवचनान्त पद है। च यह अव्यय पद है। 'पदस्य', 'पदात्', और 'अनुदात्तं सर्वमपादादौ' तीन सूत्रों का अधिकार आ रहा है। उस पदस्य यह षष्ठ्यन्त पद है, पदात् यह पञ्चम्यन्त पद है, अनुदात्तम् यह प्रथमान्त पद है, सर्वम् यह प्रथमान्त पद है, और अपादादौ

यह सप्तम्यन्त पद के अधिकार से प्राप्त है। अधिकार से प्राप्त अनुदात्त यह पद पुल्लिङ्ग अन्त के विपरिणाम होता है, उससे अनुदात्त होता है। इसी प्रकार ही सर्वम् यह पद षष्ठ्यन्त का विपरिणाम होता है, उससे सर्वस्य यह होता है। आमन्त्रितस्य इस पद को पदस्य इसके साथ सम्बद्ध है। पद से पाद के आदि में न हो सभी आमन्त्रित के पद को अनुदात्त होते हैं यह इस सूत्र का अर्थ होता है।

पदात् यहाँ पर पञ्चमी का निर्देश होने से 'तस्मादित्युत्तरस्य' इस परिभाषा से परस्य यह पद प्राप्त करते है। अपादादौ यहाँ पर औपश्लोषिक सप्तमी है, अत 'पाद के आदि में नहीं स्थित' का यह अर्थ प्राप्त होता है। पद से परे हो किन्तु पाद के आदि में वर्तमान नहीं है जो आमन्त्रित पद, उन सभी पद को अनुदात्त स्वर होता है यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण – इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमम् इति उदाहरणम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय – इस प्रस्तुत उदाहरण में गङ्गे इति, यमुने इति, और सरस्वति इति तीन पद सम्बोधन अन्त है। इसलिए इन तीनों पदों की 'सामन्त्रितम्' इस सूत्र से आमन्त्रित संज्ञा होती है। मे इस पद से परे गङ्गे यह पद है, किन्तु वह गङ्गे पद पाद के आदि में विद्यमान नहीं है, अत: आमन्त्रित संज्ञक सम्पूर्ण गङ्गे इस पद की प्रकृत सूत्र से अनुदात्त स्वर का विधान है। इसी प्रकार ही गङ्गे इस पद से परे यमुने यह पद है, किन्तु वह यमुने पद पाद के आदि में नहीं है, अत आमन्त्रित संज्ञक सम्पूर्ण यमुने इस पद का प्रकृत सूत्र से अनुदात्त स्वर का विधान है। समान ही आमन्त्रित संज्ञक सरस्वति इस सम्पूर्ण पद का भी प्रकृत सूत्र से अनुदात्त स्वर होता है। उससे इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमम् यह प्रयोग सम्भव हो सकता है।

विशेष – पद के आदि में नहीं, पद अभाव से सूत्र का अर्थ होता है की पद से पर विद्यमान सम्पूर्ण आमन्त्रित पद को अनुदात्त स्वर होता है। तब प्रस्तुत ही उदाहरण में शुतुद्रि इस पद का सम्बोधनान्त होने से 'सामन्त्रितम्' इससे आमन्त्रित संज्ञा होती है, वहाँ सरस्वति इस पद से पर आमन्त्रित संज्ञक शुतुद्रि इस सम्पूर्ण पद की प्रकृत सूत्र से अनुदात्त स्वर प्राप्त होता है, अत उसको हटाने के लिए अपादादौ यह कहा है। अत शुतुद्रि इस पद का पाद के आदि में स्थित होने से प्रकृत सूत्र से अनुदात्त स्वर नहीं होता है।

8.6 विभाषितं विशेषवचने॥ (८.१.७४)

सूत्र का अर्थ – आमन्त्रितान्त विशेषण परे होने पर पूर्व बहुवचनान्त अविद्यमान के समान विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या – अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से अविद्यमान होने का अतिदेश देते है। इस सूत्र में दो पद विराजमान हैं। विभाषितम् यह प्रथमान्त पद है। विशेष वचन यह सप्तमी एकवचनान्त समस्त पद है। यहाँ भाष्यकार ने बहुवचनम् इस पद को जोड़कर इस सूत्र को पूर्ण किया है। 'आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्' इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ पर अनुवृति आती है। 'नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम्' इस सूत्र से समानाधिकरणे आमन्त्रिते इस सप्तमी एकवचनान्त दो पद की अनुवृति

टिप्पणियाँ

आती है। सम्बोधन में जो प्रथमा है, उस पद को वेद में आमन्त्रित कहते हैं। अतः आमन्त्रित इस पद का आक्षेप किया है। ''आमन्त्रिते समानाधिकरणे विशेषवचने'' पद में आमन्त्रित को बहुवचन पद विकल्प से अविद्यमान के समान होता है इस प्रकार की पद योजना है। विशेषवचनम् इसके विशेषण इस अर्थ में है। समानाधिकरणम् इसका समानविभक्तिकम् यह अर्थ है। आमन्त्रितं बहुवचनम् ये दोनों भी पद के विशेषण हैं। इसलिए तदन्तविधि होती है। उससे सूत्र का अर्थ आता है - आमन्त्रित अन्त में समानाधिकरण में विशेषण में पद के पर आमन्त्रित अन्त बहुवचनान्त पद विकल्प से अविद्यमान के समान होता है। इसका सामान्य अर्थ है की यदि आमन्त्रित अन्त समानाधिकरण विशेषणपद बाद में रहता है तो आमन्त्रित अन्त बहुवचन अन्त पद विकल्प से अविद्यमान के समान होता है।

यह सूत्र 'नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम्' इस पूर्व सूत्र का अपवाद है। समान अधिकरण वाले आमन्त्रित पद परे हो तो उससे पूर्ववाला आमन्त्रित पद अविद्यमान नहीं होता, किन्तु विद्यमान होता है यह उस सूत्र का अर्थ है। इस प्रकार उस सूत्र से अविद्यमानवत् का निषेध प्राप्त था। इस सूत्र से तो विशेषवाची समानाधिकरण आमंत्रित परे रहते सामान्यवचन आमन्त्रित के बहुवचन अन्त के पद को विकल्प से अविद्यमानवत्त् के समान होता है।

उदाहरण - देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत।

सूत्र अर्थ का समन्वय- इस उदाहरण में देवीः यह पद सम्बोधन विभक्ति अन्त वाला है। इसलिए उसकी आमन्त्रित संज्ञा सिद्ध होती है। व्यपदेशिवद भाव को आश्रित करके देवीः इस पद की आमन्त्रित अन्तत्व होना भी सिद्ध है। और यह पद बहुवचनान्त भी है। वहाँ विद्यमान षट् इस पद को भी सम्बोधन विभक्त्यन्त होने से आमन्त्रित है। व्यपदेशिवद्भाव के आश्रित होने से षट् इस पद की भी आमन्त्रित अन्तत्व को सिद्ध करता है। और यह पद पूर्व में वर्तमान देवीः इस पद के साथ समान विभक्ति और उसका विशेषण है। इसलिए उसकी आमन्त्रित अन्त में होने से समानाधि करण विशेषण में षट्-शब्द के परे पूर्व आमन्त्रितान्त बहुवचनान्त देवीः इस पद की अविद्यमानवत्त् के समान प्रकृत सूत्र से कार्य प्राप्त हुआ। और यह अविद्यमानवत्त वैकल्पिक है। उस अविद्यमानवत्त्व पक्ष में देवीः इस पद को अविद्यमान के समान कार्य होता है। तब षट्-शब्द ही पाद के आदि में रहता है। उससे आठवें अध्याय में स्थित 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र की वहाँ प्रवृति नहीं होती है। छठे अध्याय में स्थित 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से वहाँ उदात्त स्वर का विधान है। अविद्यमानवत्त्व के अभाव पक्ष में देवीः यह पद विद्यमान ही होता है। तब षट् यह पद पाद के आदि में नहीं रहता है। इसलिए आठवें अध्याय के 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से सर्वानुदात्त स्वर की प्राप्ति होती है।

8.7 सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे॥ (२.१.२)

सूत्र का अर्थ - आमन्त्रित संज्ञक पद के परे रहते, उससे पूर्व जो सुबन्त पद उसको पर के अंग के समान कार्य होता है स्वर विषय में।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से अङ्ग के समान होने का आदेश है। सुप् आमन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे ये सूत्र में आये पदच्छेद है। इस सूत्र में चार पद है। वहाँ सुप् यह प्रथमान्त पद है। आमन्त्रिते यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। पराङ्गवत् यह प्रथमान्त समास पद है। स्वरे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। सम्बोधन में जो प्रथमा है, उस पद को वेद में आमन्त्रित कहते हैं। अतः आक्षेप से इस पद की प्राप्ति होती है। सुप् आमन्त्रित पद में पराङ्गवत् स्वरे यह पदयोजना है। 'प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः' इस परिभाषा बल से सुप् इससे सुबन्त को भी ग्रहण करता है। आमन्त्रितम् यह पद का विशेषण है। अतः यहाँ तदन्तविधि होती है। पर के अङ्ग के समान 'पराङ्गवत्' यहाँ षष्ठीतत्पुरुष समास है। यहाँ अङ्ग शब्द अवयव वाचक है। कर्तव्ये इसका अध्याहार किया है। उससे आमन्त्रितान्त सुबन्त पद के परे के अङ्ग के समान कार्य होता है, स्वर करने में यह सूत्र का अर्थ आता है। इसका सामान्य अर्थ ही यदि सुबन्त से पर आमन्त्रितान्त पद रहता है, तो उस सुबन्त पद को समीप के आमन्त्रितान्त पद के अवयव के समान कार्य होता है। अर्थात् आमन्त्रित पद में जिस प्रकार का स्वर है, उसी प्रकार का ही स्वर पूर्ववर्ति सुबन्त में भी लगाना चाहिए।

यह यहाँ जानना चाहिए - यदि सुबन्त आमन्त्रितान्त दो पद पाद के आदि में रहते हैं, तो वहाँ 'आमन्त्रितस्य च' इस छठे अध्याय में स्थित सूत्र से आद्युदात्त होता है। यदि सुबन्तम् आमन्त्रितान्त दो पद पाद के आदि में नहीं रहते हैं, तो 'आमन्त्रितस्य च' इस आठवें अध्याय में स्थित सूत्र से सभी को अनुदात्त स्वर की प्राप्त होते है। किन्तु स्वर विधान करने में ही यह पराङ्गवत् सिद्ध होता है, उससे अन्य स्थलों में नहीं सिद्ध होता है।

उदाहरण- द्रवत्पाणी शुभस्पंती। यत्तें दिवो दुहितर्मर्त भोजनम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- शुभस्पंती यह यहाँ पर उदाहरण है। शुभ शुम्भ दीप्तौ इस धातु से भाव में क्विप् प्रत्यय करने पर शुब् यह शब्द निष्पन्न होता है। उसको ही षष्ठी विभक्ति में शुभः यह रूप सिद्ध होता है। पती यह पद सम्बोधन में है। उसके परे होने पर शुभः इस पद के विसर्ग के स्थान में 'षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु' इस सूत्र से सकार होता है। यहाँ शुभस् यह षष्ठी का एकवचनान्त सुबन्त पद है। वहाँ पती यह आमन्त्रित पद है। व्यपदेशिवद्भाव के आश्रित होने से इसको भी आमन्त्रितान्तत्व सिद्ध होता है। अतः प्रकृत सूत्र से शुभस् इस पद को आमन्त्रितान्त पती इस पद के अवयव के समान होता है। उसको 'आमन्त्रितस्य च' इस छठे अध्याय के सूत्र से शुभस्पती इस समुदाय के आदि स्वर उदात्त का विधान होता है। आठवें अध्याय के सूत्र से यहाँ सभी अनुदात्त स्वर हो नहीं सकते हैं। क्योंकि 'आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्' इस सूत्र से द्रवत्पाणी यह पद अविद्यमानवत् है। उससे शुभस्पती इस पद को पाद का आदि ही होता है। पाद के आदि में विद्यमान आमन्त्रित पद को छठे अध्याय के 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से सभी को अनुदात्त स्वर हो नहीं सकते हैं। क्योंकि 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से पाद के आदि में जो नहीं है, विद्यमान आमन्त्रित उन सभी को अनुदात्त स्वर की प्राप्ति होती है।

यत्तें दिवो दुहितर्मर्त भोजनम् इस ऋग मन्त्र में दुहितः यह पद सम्बोधन में है। इसलिए यह आमन्त्रित है। व्यपदेशिवद्भाव के आश्रित होने से इसको आमन्त्रितान्तत्व भी सिद्ध होता है। उस आमन्त्रितान्त

टिप्पणियाँ

पद के परे पूर्व में विद्यमान दिव: यह सुबन्त पद पर के अवयव के समान होता है। उससे दिव: इस पद को भी आमन्त्रित होता है। और वह यहाँ पर पद से बाद में विद्यमान है, पाद के आदि में विद्यमान नहीं हैं। इसलिए आठवें अध्याय में 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से यहाँ सभी को अनुदात्त प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. छठे अध्याय में स्थित 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. आठवें अध्याय में स्थित 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र में किसका अधिकार आता है?
3. आठवें अध्याय में स्थित 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र का एक उदाहरण लिखो।
4. 'विभाषितं विशेषवचने' यह किस प्रकार का सूत्र है?
5. 'विभाषितं विशेषवचने' इस सूत्र में बहुवचनम् यह पद कैसे आता है?
6. 'विभाषितं विशेषवचने' यह किसका अपवाद सूत्र है?
7. क्या नाम आमन्त्रित है?
8. 'सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
9. क्या करने में 'सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे' यह सूत्र प्रवृत्त होता है?
10. शुभस्पती इस उदाहरण में शुभ: यहाँ कौन सी विभक्ति है?
11. आठवें अध्याय का 'आमन्त्रितस्य च' यह सूत्र क्या प्राप्ति कराता है –

    (क) अनुदात्त (ख) अन्तोदात्त (ग) सर्वानुदात्त (घ) आद्युदात्त
12. छठे अध्याय का 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र से क्या प्राप्ति होती है –

    (क) अनुदात्त (ख) अन्तोदात्त (ग) सर्वानुदात्त (घ) आद्युदात्त

8.8 उदात्तस्वरितयोर्यण: स्वरितोऽनुदात्तस्य॥ (८.२.४)

सूत्रार्थ:- उदात्त स्थान में और स्वरित स्थान में जो यण्, उससे उत्तर अनुदात्त के स्थान में स्वरित आदेश होता है।

सूत्र की व्याख्या- पाणिनीय के छ: प्रकार के सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से स्वरित स्वर की प्राप्ति होती है। उदात्तस्वरितयो: यण: स्वरित: अनुदात्तस्य ये सूत्र में आये हुए पदच्छेद है। इस सूत्र में चार पद है। वहाँ उदात्तस्वरितयो: यह सप्तमी का द्विवचनान्त पद है। यण: यह पञ्चमी का एकवचनान्त पद है। स्वरित: यह प्रथमान्त का विधेय पद है। अनुदात्तस्य यह षष्ठी का

एकवचनान्त पद है। उदात्तस्वरितयोः यणः अनुदात्तस्य स्वरितः पद को जोड़ने का क्रम है। उदात्तस्वरितयोः इसका अर्थ उदात्त स्थान में, स्वरित स्थान में। उससे उदात्त स्थान में और स्वरित स्थान में जो यण् है, उसके बाद अनुदात्त को स्वरित होता है इस प्रकार का सूत्र का अर्थ आता है। इसका सामान्य अर्थ ही उदात्त स्थान में जो यण् किया है उस यण् से पर वर्तमान अनुदात्त के स्थान में स्वरित होता है। और स्वरित स्थान में जो यण् विहित है, उस यण् से पर वर्तमान अनुदात्त के स्थान में स्वरित होता है।

उदाहरण- अभ्यंभि हि। खलप्व्याशा।

सूत्र अर्थ का समन्वय- अभ्यंभि इस उदात्त स्थान में यह यण् नियम का उदाहरण है। अभि अभि इस स्थिति में 'इको यणचि' इस सूत्र से अच् के परे अभि इसके इकार के स्थान में यण् आदेश होने से अभ्यभि यह रूप सिद्ध होता है। अभि शब्द में प्राप्त उदात्त का 'उपसर्गश्चाधिवर्जम्' इस सूत्र से निषेध होता है। अत 'फिषोन्त उदात्तः' इस सूत्र से अभि शब्द में अन्त उदात्त की प्राप्ति होती है। अतः अभि शब्द का अन्तिम इकार उदात्त है। अभि शब्द को 'नित्यवीप्सयोः' इस सूत्र से द्वित्व होने पर अभि अभि इस प्रकार की प्राप्ति होती है। वहाँ दोनों अभि शब्दों में पर अभि शब्द के स्थान में 'अनुदात्तं च' इस सूत्र से अनुदात्त स्वर की प्राप्ति है। इस अवस्था में पहले के अभि इस उदात्त के इकार के स्थान में यण् किया है। अतः उससे पर अनुदात्त के स्थान में प्रकृत सूत्र से स्वरित स्वर की प्राप्ति हुई।

खलप्व्याशा यह स्वरित स्थान में विहित यण् का उदाहरण है। खलपू शब्द का सप्तमी एकवचन में खलप्वि यह रूप बनता है। खलप्वि आशा इस स्थिति में 'इको यणचि' इस सूत्र से अच् पर होने पर खलप्वि इसके इकार के स्थान में यण् आदेश होने पर खलप्व्याशा यह रूप सिद्ध होता है। यदि उपपद समास के उत्तरपद में कोई कृदन्त पद रहता तो उस कृदन्त पद को प्रकृति से ही उदात्त होता है। यहाँ खलपू शब्द उपपद समास से बनता है। और इसके उत्तरपद कृदन्त है। अतः खलपू शब्द अन्त उदात्त सिद्ध होता है। उस खलपू शब्द से ङि प्रत्यय करने पर प्रक्रिया कार्य में खलपू इ ऐसा होने पर 'इको यणचि' इस सूत्र से यण् में खलप्वि यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ जो यण् है, वह उदात्त के स्थान में विहित है। और ङि प्रत्यय का इकार सुप् होने से अनुदात्त है। अतः उदात्त स्थान में जो यण् है, उसके पर अनुदात्त के इकार का प्रकृत सूत्र से स्वरित स्वर करने का विधान है। आशा शब्द 'आशाया अदिगख्या चेत्' इस सूत्र से अन्त उदात्त है। अतः 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' इस सूत्र से उसका आदि आकार अनुदात्त सिद्ध होता है। खलप्वि आशा इस स्वरित इकार के स्थान में यण् किया है। इस प्रकार स्वरित स्थान में विधान किया जो यण् है उससे पर अनुदात्त आकार का प्रकृत स्थान में स्वरित स्वर विहित है।

8.9 एकादेश उदात्तेनोदात्तः॥ (८.२.५)

सूत्र का अर्थ- उदात्त के साथ एकादेश उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- पाणिनि के छः प्रकार के सूत्रों में यह विधि सूत्र है। यह सूत्र उदात्त स्वर का विधान करता है। एकादेशः उदात्तेन उदात्तः ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। इस सूत्र में तीन पद हैं।

टिप्पणियाँ

एकादेशः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। उदात्तेन यह तृतीया एकवचनान्त पद है। उदात्तः यह प्रथमा एकवचनान्त विधायक पद है। उदात्तेन एकादेश उदात्तः इति सूत्र में आये पद योजना है। इस सूत्र में सह शब्द का उल्लेख नहीं है। किन्तु जैसे 'वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः' इस सूत्र में यूना यहाँ पर सह शब्द के विना भी तृतीया होती है, वैसे ही यहाँ पर भी उदात्तेन सहयोग से तृतीया है। उससे सूत्र का अर्थ होता है - उदात्त के साथ एकादेश उदात्त होता है।

उदात्त के साथ एकादेश तीन प्रकार का हो सकता है - उदात्त अनुदात्त के स्थान में एकादेश, उदात्त उदात्त के स्थान में एकादेश, और उदात्त स्वरित के स्थान में एकादेश। उदात्त उदात्त के स्थान में एकादेश होता है तो आन्तरतम्य से ही उदात्त की प्राप्ति होती है। अतः उसके लिए यह सूत्र आवश्यक नहीं है। किन्तु जब उदात्त अनुदात्त का, अथवा उदात्त स्वरित के स्थान में एकादेश होता है, तब अनुदात्त और स्वरित की प्राप्ति होती है। अतः वहाँ पर भी उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

उदाहरण- क्वं वोऽश्वाः। क्वावंरं मरुतः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- क्वं वोऽश्वाः यहाँ पर उदात्त अनुदात्त के स्थान में एकादेश होता है। वैसे हि वस् अश्वाः इति स्थिति में 'ससजुषो रुः' इससे पदान्त के सकार को रुत्व, अनुबन्ध लोप होने पर व ँअश्वाः यह स्थिति हुई 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' इस सूत्र से अप्लुत अकार से पर रु के अप्लुत अकार परक होने से उत्वे व उ अश्वाः इस प्रकार की स्थिति होने पर आद् गुणः इस सूत्र से पूर्व पर के उकार अकार के स्थान में ओकार रूप से गुण एकादेश वो अश्वाः ऐसा हुआ 'एकः पूर्वपरयोः' इस अधिकार में पढने से 'एङः पदान्तादति' इस सूत्र से पूर्व पर के ओकार अकार के स्थान में ओकार रूप पूर्वरूप एकादेश होता है। वस्तुतः बहुवचन में युष्मद्-शब्द के स्थान में 'बहुवचनस्य वस्नसौ' इस सूत्र से वस् यह आदेश होता है। 'बहुवचनस्य वस्नसौ' इस सूत्र में 'अनुदात्तं सर्वमपादादौ' इस सूत्र की अनुवृति आती है। अतः वस् यह आदेश अनुदात्त है। अश्-धातु से क्विन् प्रत्यय करने पर निष्पन्न अश्व शब्द आद्युदात्त है। इसी प्रकार अश्व शब्द का आदि अकार उदात्त है। इन दोनों उदात्त अनुदात्त के स्थान में यहाँ एकादेश हुआ है। अतः इन दोनों के स्थान में होने वाला ओकार रूप पूर्वरूप एकादेश प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

क्वावंरं मरुतः यहाँ पर उदात्त स्वरित के स्थान में एकादेश होता है। क्व अवरम् इस स्थिति में 'एकः पूर्वपरयोः' इस अधिकार में पढ़ा हुआ 'अकः सवर्णे दीर्घः' इस सूत्र से पूर्व पर अकार अकार के स्थान में आकार रूप सवर्ण दीर्घ एकादेश होता है। किम्-शब्द से 'किमोऽत्' इस सूत्र से अद् आदेश होता है। उसके बाद अत् के तकार का अनुबन्ध लोप करने पर किम् अ इस स्थिति में अत् के परे होने पर 'क्वाति' इस सूत्र से किम् के स्थान में क्व आदेश होने पर क्व अ यह स्थिति हुई 'यचि भम्' इस सूत्र से क्व इस्की भ संज्ञा होने पर 'यस्येति च' से भ संज्ञक अकार का ल् होने पर क्व् अ यह हुआ सर्व के संयोग निष्पन्न क्व इसकी प्रातिपदिक होने सुप् उत्पत्ति में अव्यय होने से 'अव्ययादाप्सुपः' इससे सुप का लुक होने पर क्व यह रूप सिद्ध होता है। अत् यहाँ पर तकार का 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से इत संज्ञा हुई। अतः 'तित्स्वरितम्' इस सूत्र से क्व यहाँ पर स्वरित स्वर की प्राप्ति है। अवर शब्द 'स्वाङ्गशिटामदन्तानाम्' इस सूत्र से आद्युदात्त है। अर्थात्

अवर शब्द का आदि अकार उदात्त है। इन दोनों उदात्त स्वरित के स्थान में यहाँ एकादेश हुआ है। अत: इन दोनों के स्थान में होने वाला आकार रूप सवर्ण दीर्घ एकादेश प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

8.10 स्वरितो वानुदात्ते पदादौ॥ (८.२.६)

सूत्र का अर्थ- पद आदि अनुदात्त के परे रहते उदात्त के साथ में हुआ एकादेश विकल्प से स्वरित होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से स्वरित स्वर का विधान करते हैं। स्वरित: वा अनुदात्ते पदादौ ये सूत्र में आये हुए पदच्छेद है। इस सूत्र में चार पद है। स्वरित: यह प्रथमान्त का विधान करने वाला पद है। वा यह अव्यय पद है। अनुदात्ते पदादौ ये दोनों पद सप्तमी एकवचनान्त हैं। 'एकादेश उदात्तेनोदात्त:' इस सूत्र से एकादेश: इस प्रथमा एकवचनान्त और उदात्तेन इस तृतीया एकवचनान्त पद की अनुवृति आ रही है। अनुदात्ते पदादौ उदात्तेन एकादेश स्वरितो वा इस प्रकार की पद योजना है। उदात्तेन यहाँ पर सह के योग से तृतीया है। उससे सूत्र का अर्थ आता है अनुदात्त पद आदि के परे उदात्त के साथ एकादेश विकल्प से स्वरित होता है। इसका सामान्य अर्थ है की यदि पद के आदि में अनुदात्त स्वर रहता है, और उससे पूर्व उदात्त स्वर रहता है, तो उस अनुदात्त और उदात्त के स्थान में जो एकादेश होता है, वह एकादेश विकल्प से स्वरित होता है। जिस पक्ष में स्वरित नहीं होता है, वहाँ 'एकादेश उदात्तनोदात्त:' इस पूर्व सूत्र से उदात्त स्वर होता है।

इस सूत्र में जो विभाषा है, वह व्यवस्थित विभाषा है। इस विभाषा की प्रवृत्ति में वैसे कोई भी निर्दिष्ट नियम नहीं है। यह विभाषा कहाँ पर लगेगी, कहाँ पर नहीं लगेगी। अत: इस सूत्र से कहीं पर भी स्वरित स्वर होता है, कही पर भी उदात्त स्वर होता है।

उदाहरण- वींदं ज्योतिर्हृदये। अस्य श्लोकों दिंवीयते।

सूत्र अर्थ का समन्वय:- वींदम् यह स्वरित का उदाहरण है। वि इदम् इस स्थिति में 'एक: पूर्वपरयो:' इस अधिकार में पढ़ा हुआ 'अक: सवर्णे दीर्घ:' इस सूत्र से पूर्व पर इकार, इकार के स्थान में ईकार रूप सवर्ण दीर्घ एकादेश होने पर वीदम् यह रूप सिद्ध होता है। वि इति एक निपात है। अत निपात कारण से यह आद्युदात्त है। इदम्-शब्द 'फिषोन्त उदात्त:' इस फिट् सूत्र से अन्तोदात्त है। अत: 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' इस सूत्र से इसका आदि इकार अनुदात्त है। इसी प्रकार वि यहाँ पर उदात्त स्वर है। वहाँ इदम् यहाँ पर पाद के आदि में अनुदात्त स्वर है। अत इन दोनों उदात्त अनुदात्त के स्थान में जो ईकार रूप एकादेश हुआ वह प्रकृत सूत्र से विकल्प से स्वरित होता है।

दिंवीयते यह उदात्त का उदाहरण है। दिवि ईयते इस स्थिति में 'एक: पूर्वपरयो:' इस अधिकार में पढ़ा हुआ 'अक: सवर्णे दीर्घ:' इस सूत्र से पूर्व पर इकार ईकार के स्थान ईकार रूप सवर्ण दीर्घ एकादेश होने पर दिवीयते यह रूप सिद्ध होता है। दिवि यहाँ पर ङि विभक्ति है, वह 'उडिदम्पदाद्यप्पुम्रैद्युभ्य:' इस सूत्र से उदात्त है। दिवादिगण में जिस ईङ् गतौ इस धातु से लट् प्रथम

पुरुष एकवचन में ईयते यह रूप सिद्ध होता है। दिवि यह अतिङन्त पद है। और ईयते यह तिङन्त पद है। अतः 'तिङ्ङतिङः' इस सूत्र से ईयते इसका ईकार अनुदात्त है। अतः इन दोनों के उदात्त अनुदात्त के स्थान में जो ईकार रूप एकादेश हुआ, वहाँ पर प्रकृत सूत्र से स्वरित स्वर प्राप्त हुआ। किन्तु सूत्र का वैकल्पिक होने से पक्ष में 'एकादेश उदात्तेनोदात्तः' इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान किया है।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. 'उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोनुदात्तस्य' इस सूत्र से किसका विधान है?
2. आशा शब्द किस सूत्र से अन्तोदात्त है?
3. अभि शब्द को द्वित्व किस सूत्र से हुआ है?
4. खलपू-शब्द में क्या समास है –

   (क) अव्ययीभावसमास (ख) उपपदसमास

   (ग) तत्पुरुषसमास (घ) कर्मधारयसमास
5. किम् के स्थान में क्व आदेश किस सूत्र से होता है?
6. अवर शब्द किस सूत्र से आद्युदात्त है?
7. 'एकादेश उदात्तेनोदात्तः' इस सूत्र में उदात्तेन यहाँ पर तृतीया किस प्रकार की है?
8. क्वं वोऽश्वाः यहाँ पर किसके स्थान में एकादेश है –

   (क) उदात्त उदात्त का (ख) उदात्त अनुदात्त का

   (ग) उदात्त स्वरित का (घ) स्वरित उदात्त का
9. क्वावरं मरुतः यहाँ पर किसके स्थान में एकादेश है –

   (क) उदात्त उदात्त का (ख) उदात्त अनुदात्त का

   (ग) उदात्त स्वरित का (घ) स्वरित उदात्त का
10. 'स्वरितो वानुदात्ते पदादौ' इस सूत्र में किस प्रकार की विभाषा है?
11. इदम्-शब्द किस सूत्र से अन्तोदात्त है?
12. ईयते यह किस धातु का रूप है?
13. वीदम् इसमे जो ईकार है, उसमे कौन सा स्वर है?

पाठ का सार

'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' यह परिभाषा स्वर विधि विषय है। उसका अर्थ ही एक पद में यदि एक उदात्त अथवा स्वरित अच् रहता है, तो उस एक अच् को छोड़कर अन्य सभी अच् अनुदात्त होते है। अनुदात्त परे होने पर किसी उदात्त स्वर का लोप होता है, तो उस लोप निमित्ती भूत अनुदात्त के स्थान में उदात्त होता है 'अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः' इस सूत्र का सामान्य अर्थ है। अकार के लुप्त होने पर जो अञ्च् धातु है उस अञ्च् धातु के परे होने पर पूर्व का अन्त उदात्त होता है 'चौ' इस सूत्र का अर्थ है। सम्बोधन में जो प्रथमा विभक्ति है उसको वेद में आमन्त्रित कहते है। आमन्त्रित संज्ञक पद का आदि अच् उदात्त होता है यह छठे अध्याय में पढ़े हुए 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र का अर्थ है। आठवें अध्याय में पढ़े हुए 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र का अर्थ है की पद से पर किन्तु पाद के आदि में अवर्तमान जो आमन्त्रित पद है, उस सभी पद को अनुदात्तस्वर होता है। 'विभाषितं विशेषवचने' यह एक अतिदेश सूत्र है। यदि आमन्त्रितान्त समान विभक्ति विशेषण पद परे रहता है, तो आमन्त्रितान्त बहुवचनान्त पद विकल्प से अविद्यमान के समान होता है यह उस सूत्र का अर्थ है। अविद्यमानवत् होने से उसके आश्रित् बहुत से विधान सम्भव है। वहाँ 'सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे' इस सूत्र से आमन्त्रित पद के परे पूर्ववर्ति सुबन्त पद का अङ्गवत्त के समान कार्य होता है। उदात्त स्थान में और स्वरित स्थान में जो यण् है, उसके पर अनुदात्त के स्थान में स्वरित होता है 'उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोनुदात्तस्य' इस सूत्र का अर्थ है। 'एकादेश उदात्तेनोदात्तः' इस सूत्र से उदात्त अनुदात्त का, और उदात्त स्वरित के स्थान में जो एकादेश होता है, वह एकादेश उदात्त होता है। उसका परवर्ति 'स्वरितो वानुदात्ते पदादौ' इस सूत्र से विकल्प से स्वरित स्वर का विधान किया है। और उस सूत्र का अनुदात्त पद आदि के परे उदात्त के साथ एकादेश विकल्प से स्वरित होता है। और स्वरित के अभाव में 'एकादेश उदात्तेनोदात्तः' इस सूत्र से उदात्त होता है। इन सभी सूत्रों का यहा उदाहरण सहित व्याख्या की है।

पाठांत प्रश्न

1. 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. 'अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः' इस सूत्र का उदाहरण में समन्वय कीजिए।
3. आठवें अध्याय में विद्यमान 'आमन्त्रितस्य च' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. 'विभाषितं विशेषवचने' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. 'सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. क्वं वोऽश्वाः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
7. खलप्व्याघ्शा इस रूप को सिद्ध कीजिए।
8. व्यवस्थित विभाषा विषय पर टिप्पणी को लिखकर उसका एक उदाहरण बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. परिभाषासूत्र।
2. अनुदात्त है इसके इस अर्थ में अनुदात्त शब्द से 'अर्श-आदिभ्योऽच्' इस सूत्र से मत्वर्थीय-अच् प्रत्यय है।
3. अनुदात्त स्वर।
4. जिस अनुदात्त के परे उदात्त का लोप होता है उसको उदात्त होता है।
5. देवीं वाचम् उदाहरण है।
6. उदात्त निवृत्ति स्वर अपवाद भूत यह सूत्र है।
7. लुप्त-अकार विशिष्ट अञ्च्-धातु यह अर्थ है।
8. देवद्रीचीं नयत देवयन्तः उदाहरण है।

8.2

1. आमन्त्रित का आदि उदात्त होता है।
2. 'पदस्य', 'पदात्', और 'अनुदात्तं सर्वमापादादौ' है।
3. इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमम् उदाहरण है।
4. अतिदेश सूत्र।
5. भाष्यकार के वचन से।
6. नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् का अपवाद है।
7. सम्बोधन विभक्त्यन्त पद को वेद में आमन्त्रित कहते है।
8. सुबन्त आमन्त्रित में परे पर का अङ्गवद् होता है स्वर करने में।
9. स्वर करने में।
10. षष्ठी विभक्ति।
11. (ग)
12. (घ)

8.3

1. स्वरित स्वर।
2. आशाया अदिगख्या चेत् इस सूत्र से।
3. नित्यवीप्सयोः इस सूत्र से।
4. (ख)
5. क्वाति इस सूत्र से।
6. स्वाङ्गशिटामदन्तानाम् इस सूत्र से।
7. सह शब्द के योग से।
8. (ख)
9. (ग)
10. व्यवस्थित विभाषा है।
11. फिषोन्त उदात्तः।
12. ईङ् गतौ धातु।
13. स्वरित स्वर।

॥ आठवां पाठ समाप्त॥